ब्याज का तरलता - अधिमान सिद्धांत
(Liquidity Preference Theory of Interest)

B.A Part - I

प्रो० केन्स (J.M. Keynes) ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "The General Theory of Employment, Interest and Money" में ब्याज के तरलता अधिमान सिद्धांत (Liquidity Prefrence Theory of Interest) का प्रतिपादन किया है जिसे केन्स का ब्याज सिद्धांत (Keynesian Theory of Interest) भी कहते हैं। केन्स के अनुसार ब्याज विशुद्ध रूप से एक मौद्रिक घटना है (interest is purely a monetary phenomenon) क्योंकि ब्याज की दर का निर्धारण मुद्रा की माँग एवं पूर्ति के द्वारा होता है। मुद्रा की पूर्ति (supply of money) सरकार एवं केन्द्रीय बैंक की नीतियों पर निर्भर करती है और किसी दिये हुए समय में मुद्रा की पूर्ति (supply of money) सरकार एवं केन्द्रीय बैंक की नीतियों पर निर्भर करती है और किसी दिये हुए समय में मुद्रा की पूर्ति प्रायः निश्चित रहती है। अतः ब्याज के निर्धारण में मुद्रा की माँग (Demand for money) अधिक सक्रिय रहती है। मुद्रा की माँग इसलिये की जाती है कि यह एक पूर्णतः तरल सम्पत्ति (Perfectly liquid asset) है, अतः केन्स ने मुद्रा की माँग को तरलता - अधिमान (Liquidity Preference) कहा है। तरलता अधिमान का अर्थ यह है कि किसी निश्चित समय में लोग कितनी नकद अथवा तरल मुद्रा की माँग करते हैं। लोग कई कारणों से अपनी आय को तरल अथवा नकद मुद्रा के रूप में रखना पसन्द करते हैं। अतः केन्स के अनुसार "ब्याज एक निश्चित अवधि के लिये तरलता के परित्याग का पुरस्कार है" (interest is the reward for parting with liquidity for a specified period)

अब प्रश्न उठता है कि लोग अपनी आय को तरल रूप में रखना क्यों पसंद करते हैं?

केन्स के अनुसार निम्नलिखित तीन उद्देश्यों से लोग मुद्रा को नकद अथवा तरल रूप में रखना पसन्द करते हैं अथवा मुद्रा की माँग करते हैं—

(1) लेन देन की प्रवृत्ति (Transaction Motive) - प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय को एक अंश नकद मुद्रा के रूप में अपने दैनिक खर्च अथवा लेन देन के लिए रखना चाहता है जिसे लेन देन की प्रवृत्ति कहते हैं। लेन-देन की प्रवृत्ति के भी दो भाग हैं - (क) आय प्रवृत्ति (Income Motive) तथा (ख) व्यवसाय प्रवृत्ति (Business Motive)।

Scanned with CamScanner

चूँकि लोगों के आय प्राप्त करने तथा व्यय करने के बीच समय का अन्तर होता है अतः वे कुछ न-कुछ नकद मुद्रा अपने दैनिक खर्च के लिये अपने पास रखना चाहते हैं। इसे आय प्रवृत्ति कहते हैं। इसी प्रकार व्यापारी वर्ग भी कच्चे माल, मजदूरी आदि पर खर्च करने के लिये मुद्रा की एक निश्चित मात्रा अपने पास नकद रूप में रखना चाहता है, इसे व्यवसाय प्रवृत्ति कहते हैं। इस प्रकार लेन देन की प्रवृत्ति इन दोनों प्रवृत्तियों का योग है।

(2) आकस्मिक घटनाओं की प्रवृत्ति (Precautionary Motive) — नकद मुद्रा की माँग आकस्मिक घटनाओं के लिये भी की जाती है। चूँकि मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की अप्रत्याशित घटनाएँ घटती रहती हैं जैसे रोग, शादी-ब्याह, मृत्यु इत्यादि, अतः इनके लिये मनुष्य कुछ न कुछ मुद्रा अपने पास रखना चाहता है। व्यापारी वर्ग भी व्यापार की अप्रत्याशित आवश्यकताओं के लिये मुद्रा को अपने पास रखना चाहते हैं। इस तरह अपनी आय का एक हिस्सा मुद्रा के रूप में रखना आकस्मिक घटनाओं की प्रवृत्ति के अन्तर्गत आता है। यहाँ ध्यान रखना चाहिये कि लेन-देन की प्रवृत्ति (Transaction Motive) तथा आकस्मिक घटनाओं की प्रवृत्ति (Precautionary Motive) के लिये मुद्रा की माँग मुख्यतः आय के स्तर (level of income) पर निर्भर करती है।

(3) सट्टेबाजी की प्रवृत्ति (Speculative Motive) :- मुद्रा की माँग के पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण शक्ति काम करती है वह सट्टेबाजी की प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति से जो मुद्रा की माँग की जाती है उसका उद्देश्य यह होता है कि भविष्य में सट्टा बाजार की प्रवृत्तियों का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करके अधिक से अधिक मुनाफा कमाया जाय। केन्स (Keynes) के अनुसार "Speculative motive is the desire of earning profit by knowing better than the market what the future will bring forth" जब ब्याजदर अधिक होती है तो सट्टेबाजी के लिये मुद्रा की माँग कम की जाती है, लेकिन ब्याज की दर कम रहने पर इस माँग में वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner